



ट्रिन-ट्रिन- ट्रिन साइकिल की घंटी बजी।

नानी के घर जाने की उत्सुकता में बैठी निशा ने दौड़ कर दरवाजा खोला।

सारी तैयारी हो गई ? पिताजी ने अन्दर आते हुए पूछा।

हाँ पिताजी, माँ के साथ मिलकर मैंने और भइया ने सारी तैयारी कर ली है। सारा सामान बैग में रख लिया है। निशा ने बताया।

माँ कह रही थीं कि आप टिकट लेकर आने वाले हैं ? मुझे भी दिखाइए ये टिकट कैसा होता है ? सुभाष ने कहा।

पिताजी ने हँसते हुए जेब से टिकट निकाल कर सुभाष को दिया। निशा और सुभाष टिकट को कौतूहल से देखने लगे।

रेलगाड़ी में बैठ कर बहुत मजा आएगा-निशा ने कहा।

ये टिकट बस का है हम लोग बस से यात्रा करेंगे-पिताजी ने बताया।

हमें कैसे पता चलता है कि टिकट बस का है या रेलगाड़ी का ? सुभाष ने पिताजी से पूछा।

टिकट को ध्यान से देखो उस पर राज्य परिवहन का चिह्न बना है और हमने इसे बस अड्डे से खरीदा है।

तो क्या हम रेलगाड़ी से नहीं जाएँगे ? निशा ने रूआँसी होकर पिताजी से पूछा।

लौटते समय रेलगाड़ी से आएँगे। लौटने का टिकट हमने रेलवे स्टेशन से आरक्षित करा लिया है। पिताजी से यह बात सुनकर निशा खुशी से उनके गले से लिपट गई।



चर्चा करें –

- क्या आपने ऐसी कोई यात्रा की है, जिसमें टिकट खरीदना पड़ा हो ?
- आपने यात्रा किस साधन से की ?
- यात्रा के लिए आपने टिकट कहाँ से खरीदा ?
- क्या आप बता सकते हैं कि टिकट का मूल्य कितना था ?

नानी के घर जाने के लिए निशा और सुभाष अपने माता-पिता के साथ बस में बैठ गए। बस में एक व्यक्ति कन्धे पर बैग टाँगे हुए हाथ में मशीन लेकर खड़ा था। वह लोगों से जाने की जगह पूछ कर मशीन से पर्ची निकाल कर दे रहा था और उनसे पैसे ले रहा था। यह सब देखकर सुभाष ने पिताजी से पूछा —ये आदमी कौन है ?

ये बस के कन्डक्टर हैं इन्हें परिचालक भी कहते हैं—पिताजी ने बताया।

बस कन्डक्टर लोगों को कैसी पर्ची दे रहे हैं ?
निशा ने पूछा

जिन लोगों ने पहले से टिकट नहीं लिया था, उनका टिकट बनाकर दे रहे हैं। जब बस चलने लगेगी तब ये सबके टिकट की जाँच करेंगे। यह यात्रियों के उतरने वाले स्थान पर भी बस रोकने के लिए ड्राइवर को संकेत देते हैं। ड्राइवर इनके संकेत पर ही बस रोकता व आगे बढ़ाता है।

शाम तक हम सब नानी के घर पहुँच गए। नानी के घर तीन दिन कैसे बीत गए पता ही नहीं चला। चौथे दिन हम सब को अपने घर लौटना था। स्टेशन जाने के लिए नाना जी ने ऑटो रिक्शा बुलाया।

“क्या आपने ऑटो रिक्शा का टिकट लिया है ?” निशा ने नाना जी से पूछा।

“नहीं, ऑटो रिक्शे का टिकट लेने की जरूरत नहीं पड़ती” नाना जी ने बताया।

“हमें कैसे पता चलेगा कि हमें स्टेशन तक जाने के लिए ऑटो रिक्शा का कितना पैसा देना होगा” सुभाष ने पूछा।

“ऑटो वाले से पूछकर दूरी के हिसाब से पैसा दिया जाएगा।” लेकिन कुछ जगह ऑटो रिक्शा में मीटर लगा होता है जिससे यात्रा की दूरी देखकर किराया दिया जाता है।” नाना जी ने बताया।

हम सब स्टेशन पहुँच गए। स्टेशन की सड़क पर बहुत भीड़ थी। नानाजी ने मेरा हाथ पकड़ कर सड़क पार कराया।



सड़क पर ध्यान दें—

- डिवाइडर वाली चौड़ी सड़कों को दो हिस्सों में पार करें।
- वृद्ध, दिव्यांग एवं छोटे बच्चों को सड़क पार करने में सहयोग करें।

नानाजी ने हमें रेलगाड़ी में बिठा दिया। रेलगाड़ी चलने से पहले नानाजी से हम सबने विदा लिया। रेलगाड़ी चलने के थोड़ी देर बाद ही एक व्यक्ति आया जो काला कोट पहने था। कोट पर रेल परिवहन का निशान बना था। पिताजी ने बताया ये रेलवे के टिकट परीक्षक हैं। इन्हें टी0टी0ई0 भी कहते हैं। पिताजी ने उन्हें हम सब का टिकट दिखाया। नानी के घर की बातें करते-करते हमें यात्रा का पता ही नहीं चला।



क्या करें	क्या न करें
● टिकट लेकर यात्रा करें। (बिना टिकट के यात्रा करना दण्डनीय अपराध है।)	● टिकट खिड़की के अतिरिक्त किसी अन्य व्यक्ति से टिकट न खरीदें।
● प्रतीक चिहनों को समझें, सम्मान करें और उनसे सम्बन्धित नियमों का पालन करें।	● उत्सव के अवसरों पर पैसे/रुपयों को जमीन पर न फेंकें।
● यात्रा के पूर्व टिकट पर तिथि एवं समय की जाँच कर लें।	● यात्रा वाहन में कचरा न फैलाएँ।
● यात्रा के लिए समय से स्टेशन पहुँचें।	● चलती हुई गाड़ी से न उतरें और न ही चढ़ें।
● यात्रा के दौरान अपने सामान की सुरक्षा स्वयं करें।	● यात्रा के दौरान लावारिस वस्तुओं को न छुएँ।

आइए जानें— किन तरीकों से यात्रा टिकट लिया जा सकता है—

रेलगाड़ी का टिकट —

- स्वयं स्टेशन जाकर टिकट खिड़की से टिकट खरीद सकते हैं।
- मोबाइल या कम्प्यूटर द्वारा इन्टरनेट के माध्यम से ऑनलाइन टिकट खरीद सकते हैं।
- यात्रा के पूर्व टिकट आरक्षित भी करा सकते हैं।



बस का टिकट –

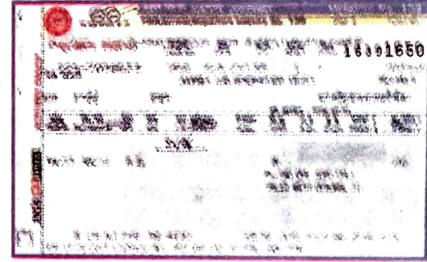
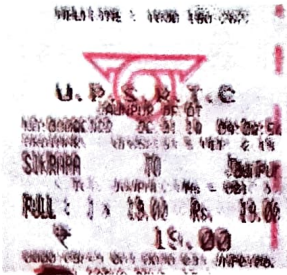
- टिकट खिड़की से।
- बस में कन्डक्टर से।
- ऑनलाइन टिकट एवं आरक्षण।



वर्तमान समय में टिकट खिड़की के अलावा मोबाइल के द्वारा इन्टरनेट के माध्यम से ऑनलाइन भी टिकट खरीदा एवं बुक किया जा सकता है जिसे ई-टिकट कहते हैं। इसमें टिकट का प्रारूप मोबाइल पर आ जाता है जिसमें यात्रा का पूरा विवरण छपा रहता है। टिकट के पैसों का भुगतान ई-पेमेन्ट से करने की भी व्यवस्था है। ऑनलाइन टिकट लेने पर यात्रा के दौरान पहचान पत्र की आवश्यकता पड़ती है।

गतिविधि

चित्र देखकर टिकट की पहचान करें और उसके नीचे सम्बन्धित वाहन का नाम लिखें-



चित्र को देखें और बताएँ-



- आपने किन-किन नोटों को देखा है ?
- दस के नोट पर किस जानवर का चित्र बना है ?
- कौन सा चिह्न प्रत्येक सिक्के पर पाया जाता है ?
- प्रत्येक नोट पर किस महापुरुष का चित्र छपा है ?
- यात्रा टिकट का भुगतान किन-किन रूपों में कर सकते हैं ?
- चित्र में स्वच्छता का सन्देश किस प्रतीक के रूप में दर्शाया गया है ?



उत्तर लिखें –

1. यात्रा के लिए टिकट खरीदना क्यों जरूरी है ?
2. कन्डक्टर का क्या काम होता है ?
3. रेलगाड़ी का टिकट कहाँ से खरीदेंगे ?
4. यदि हम स्टेशन नहीं जा पा रहे हैं तो टिकट कैसे खरीदेंगे ।
5. हम रुपयों की पहचान कैसे करेंगे ?
7. किन्हीं दो वाहनों के यात्रा टिकट अपने परिवार एवं मित्रों से प्राप्त करें और उसे नीचे बने खानों में चिपकाएँ तथा उससे सम्बन्धित विवरण को लिखें –

- यात्रा वाहन का नाम :.....
- यात्रा की तिथि :.....
- टिकट का दाम :.....
- यात्रा कहाँ से कहाँ तक :.....
- टिकट का नम्बर :.....



प्रोजेक्ट वर्क

अपने दादा-दादी अथवा उनकी आयु के अन्य लोगों से पता करें कि वे पहले कौन से रुपयों और सिक्कों का प्रयोग करते थे। उन रुपयों और सिक्कों को देखें। नए रुपयों और सिक्कों में क्या-क्या अन्तर आया है। कोई पाँच अन्तर बिन्दुवार अपनी पुस्तिका में लिखें।